महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

शोध प्रबंध का संक्षिप्त विवरण
पीएच. डी. (हिन्दी)

"स्त्री विमर्श के परिपार्श्व में मृणाल पाण्डे का रचना

संसार : एक अध्ययन"

अनुसंधित्सु
दिलीप कुमार
शोध निर्देशक
डॉ. अनीता शुक्ल
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात
हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात
2024-25

स्त्री विमर्श के परिपार्श्व में मृणाल पाण्डे का रचना संसार : एक अध्ययन

विषय सूची-

<u>अनुक्रमणिका</u>

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	भूमिका	HV
	स्त्री विमर्श का अर्थ, परिभाषा क्षेत्र तथा महत्व	01-109
द्वितीय अध्याय	मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	110-174
तृतीय अध्याय	मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	175-258
चतुर्थ अध्याय	मृणाल पाण्डे के कहानी संग्रह में स्त्री विमर्श	259-356
पंचम अध्याय	मृणाल पाण्डे के नाटकों में स्त्री विमर्श	357-440
षण्ठ अध्याय	मृणाल पाण्डे के निबंधों एवं अन्य विधाओं में स्त्री विमर्श	441-510
	उपसंहार	511-521
	संन्दर्भ ग्रन्थ सूची	522-531

शोध प्रबंध का संक्षिप्त विवरण/Executive Summary

साहित्य जीवन के विविध पक्षों का मूल्यांकन करता है यही कारण है कि व्यक्ति का रुझान साहित्य की तरफ बढ़ता जा रहा है। साहित्कार जब साहित्य का अध्ययन अपने स्तर

पर करता है तब वह समाज की विसंगतियों, आयामों एवं समस्याओं को उसमें ढूढ़ने का प्रयास करता है। सदैव से मेरी रुचि हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं के प्रति रही है। खासकर नारी-विमर्श को पढ़ने एवं उस पर कार्य करने की दृढ़ ईच्छा शक्ति मुझे शोध की तरफ प्रेरित किया। साथ ही साथ मैंने नारी-विमर्श के साथ स्त्री रचनाकार को अपने विषय के केन्द्र में रखा। आज स्त्री जिन विसंगतियों एवं समस्याओं से जूझ रही है वह साधारण रुप से साहित्य एवं विमर्श के केन्द्र में है।

मृणाल पाण्डे का रचना संसार स्त्री-विमर्श के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करता हैं। उनके उपन्यासों, नाटकों, कहानियों आलोचनात्मक निबन्धों में स्त्री जीवन का जो पक्ष दिखाई देता है शायद ही किसी रचनाकार के यहां वैसा वैज्ञानिक, तार्किक, विश्लेषणात्मक तथा गुणात्मक अध्ययन मिलें। शोध की दृष्टि से भी उनका साहित्य रिसर्च की अनेक कसौटियों का विवरण प्रस्तुत करता हैं। मृणाल जी के उपन्यासों में स्त्री दशा एवं दिशा का जो पक्ष प्रस्तुत हुआ है वह उपन्यासकारों को एक नई दिशा प्रदान करता है। उपन्यास विधा में नारी-विमर्श को केन्द्र में रखकर समाज के जिस रुप का चित्रण मृणाल जी ने किया है वह उनकी प्रतिभा का उदाहरण है।

उपन्यास साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। स्त्री चितंन की जिस तस्वीर को साहित्यकार मृणाल पाण्डे ने प्रस्तुत किया है वह सभी- आलोचकों तथा विमर्शकारों के लिए के नया प्रश्न हैं।

मृणाल पाण्डे की कहानियां जीवन के सारगर्भित विवरणों का अंकन प्रस्तुत करती हैं। इनकी कहानियां कल्पना के ताने-बाने में नहीं बुनी गयी है बल्कि देखकर, समझकर यथार्थ के धरातल पर खींची गयी तस्वीर की तरह हैं। स्त्री विमर्श पर जो बातें आज हो रही हैं। मृणाल जी ने बहुत पहले से उस पर संकेत कर चुकी है। स्त्री जीवन की निजी समस्याओं, अस्पतालों, ग्रामों, अंचलों, बाजारों,उत्सवों तथा कुप्रथाओं को केन्द्र में रखकर सामाजिक विसंगतियों पर लेखिका ने गहरी चोंट किया है। उनकी कहानियां केवल ऐसे झटके में नही

कह दी गयी है बल्कि कुरेदती सच्चाइयों का एक हिसाब प्रस्तुत करती हैं।

नाटककार न होते हुए भी रचनाकार ने स्त्री को अपने नाटकों में व्यक्त कर एक नया प्रयोग किया है। नाटक साहित्य को जीवंत बनाता है। नाटक में प्रयोग एवं अनुसंधान की संभावनाएं भी बहुत है। निबंधात्मक लेखों के कारण ही मृणाल पाण्डे की पहचान है। उनके लेख नारी मन की अकुलाहटों को व्यक्त करते हैं। नारी विमर्श में रचनाकार जो ढूढना चाहता है या कहना चाहता है वह उनके निबंधों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। उनके निबंधों में स्त्री चिंतन की तथा शोध की समस्त पद्धतियां दिखाई पड़ती है। आज शोध की जिन बारीकियों की चर्चा सभाओं, गोष्ठियों में होती है उस दृष्टि से मृणाल जी के निबंध अछूते नहीं हैं।

संक्षिप्त अनुसंधान पद्वति-

इस शोध प्रबंध में शोध की विभिन्न पद्धतियां मौजूद है। कई शोध पद्धतियों का सहारा लेकर साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। शोध की तर्ज पर नारी विमर्श को पढ़ने एवं समझने का ढंग आगे आने वाले शोधकर्ताओं के लिए एक नया मार्ग प्रस्तुत कर सकेगा। इस शोध प्रबंध को इस प्रकार के पद्धतियों के साथ देखा जा सकता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति-

स्त्री चितंन की जो प्रक्रियाएं गतिशील है, जिनका वर्णन करके समाज को एक नई दिशा प्रदान की जा सकती है तथा नारी विमर्श के क्षेत्र में स्त्री दशा की प्रवृत्तियों को जहाँ खोजा जा सके, उनमें सुधारकर उसे एक नवीन रुप दिया जा सके ऐसी पद्धति वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति में शामिल है। जिसके आधार पर हम किसी शैक्षिक संस्था, परिस्थिति व्यवस्था, प्रविधि, जन समुदाय के वर्तमान स्वरुप का व्यवस्थित अध्ययन करते है तथा वर्तमान जीवन की जानकारी प्राप्त करते है।

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति-

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग रचना में किसी दी गयी परिघटना से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए की जाती है। इनका सम्बन्ध सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान स्थितियों अथवा संबंधों, मौजूदा चलनों, वर्तमान मान्याताओं, दृष्टिकोणों अथवा रुखों, अथवा वर्तमान में चलती प्रकृयाओं और उनका पड़नेवाला प्रभाव और विकसित चलनों से होता है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते है कि अध्ययन के समय पायी जाने वाली स्थिति ही प्रकृति का निर्धारण करती है। विवरणात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य किसी परिस्थिति में प्रवृत्तियों अथवा स्थितियों के सन्दर्भ में क्या पाया जाता है? इसका वर्णन करता है।

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति-

इस पद्धति का प्रयोग निष्कर्ष निकालने और निष्कर्ष तक पहुचने के लिए, जानकारी प्राप्त करने के लिए, विश्लेषण करने और व्याख्या करने की प्रक्रिया तक है। शोध के उद्देश्यों एवं अपने पास मौजूद तथ्यों के आधार पर हम विभिन्न तरीकों का प्रयोग करके विश्लेषणात्मक शोध कर सकते हैं।

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति-

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग हमेशा से विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में अभिव्यक्त परक चेतना के अध्ययन में आया है। ज्ञान एवं अनुभव के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उद्घाटित कर एकता का सामजस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। तुलनात्मक शोध अनेक विधियों द्वारा किया जा सकता है जैसे- काव्य कृतियों की भाषा का तुलनात्मक शोध, भाषा अनुसंधान सम्बन्धी तुलनात्मक शोध, एक समयावधि की रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन का, फिर समान विषय वस्तु संबंधी रचनाओं में तुलनात्मक अनुसंधान।

हिन्दी केवल भारत की ही भाषा नहीं है वरन यह अब कई देशों में बोली जाने वाली भाषा हो चुकी है। इसमें तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा विकास और समृद्धि के अवसर भी प्राप्त हो

रहे हैं। वर्तमान समय में एक सी भाषा के अध्ययन और लिपियों की जानकारी के विषय में यह कारगर हो रही है। इतना ही नहीं यह भाषा राष्ट्र के उत्थान एवं मानवीय जीवन के संवेदनाओं को व्यक्त करने वाली भाषा है। अतः तुलनात्मक अनुसंधान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

सुविधा की दृष्टि से मैने अपने शोध प्रबंध को निम्न बिन्दुओं के आधार पर पूर्ण किया है जिसमें विषय का प्रतिपादन एवं अभिव्यक्ति पूर्णरुपेण हो सकें।

शोध प्रबन्ध का विवरण-

प्रथम अध्याय

स्त्री-विमर्श का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्व

(1) स्त्री-विमर्श का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्व

(2) स्त्री-विमर्श का इतिहास तथा विकास

(3) स्त्री-विमर्श, स्त्री चेतना, स्त्री संवेदना, पदों की व्याख्या

(4) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, तथा भौगोलिक संदर्भ में स्त्री-विमर्श का स्वरूप

स्त्री विमर्श का अर्थ है- स्त्रियों के अधिकारों के लिए बहस या विचार । स्त्री के संबंध में होने वाला चिंतन मनन तो बहुत पहले से साहित्य और समाज में मिलता है। आदिकाल से स्त्री किसी न किसी माध्यम से समाज में चर्चा के केंद्र में रही है। मुख्यतः हिंदी में प्रसिद्ध नारीवाद या स्त्रीवाद शब्द का समानार्थी अंग्रेजी शब्द फ़ेमिनिज्म (Feminism) है।यह फ्रेंच भाषा से लिया गया शब्द है जो 19वीं शताब्दी के दौर में प्रचलित था। यह शब्द विशेषतः

चिकित्साशास्त्र में प्रयुक्त होता था। कुछ समय बाद यह शब्द अमेरिका में बीसवीं शताब्दी के दौर में सामान्य महिलाओं के समूह के अर्थ में प्रयोग होने लगा।

सबसे पहले स्त्री- विमर्श पर बात करें तो 'स्त्री'और 'विमर्श'दो शब्द हैं। पहला शब्द स्त्री है - ऋग्वेद में 'मेना'शब्द नारी के अर्थ में प्रयोग हुआ है। यास्क के अनुसार 'मानयन्ति एनाः पुरुषा' (निरुक्त 3/21/ 2) पुरुष इनका सम्मान करते हैं इसलिए स्त्रियों को मेना कहा गया है। ऋग्वेद में ग्ना शब्द भी स्त्री के अर्थ में आया है।

अतः नारीवाद एक कल्पना नहीं है बल्कि उपेक्षित, प्रताड़ित, घृणित स्त्रियों के प्रति किए गए व्यवहार के विषय में एक चिंतन है। युगों-युगों से उपेक्षित नारी के प्रति दया का भाव जगाने की आवश्यकता हुई। शक्ति तो स्त्री में थी ही पर उसे जागरूक करने की आवश्यकता थी। अतः चिंतन की विचारधारा विमर्श का प्रतिनिधित्व करने लगी। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में इसका अर्थ है- 19वीं शताब्दी के मध्य काल से लेकर यूरोप में विकसित स्त्री अधिकारों का प्रस्ताव। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ,सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को समान स्तर पर मान्यता। इन मान्यताओं को एक चिंतन के रूप में प्रस्तुत करने के लिए 'फेमिनिज्म' नाम दिया गया।

स्त्री-विमर्श में 'विमर्श'शब्द का मतलब है- स्त्री के संदर्भ में गंभीर चिंतन । जब संपूर्ण आजादी अधिकार, सुख- सुविधा के दावे किए जा रहे थे तब यह विमर्श शुरू क्यों हुआ? ऐसे कई सवाल हैं जो स्त्री को केंद्र में रखने को विवश करते हैं ।

स्त्री विमर्श की परिभाषा -

मृणाल पाण्डे के अनुसार - "इस तरह नारीवादी शब्दावली की ओट में छोटे से संपन्न वर्ग की स्त्रियों की स्वतंत्रता और उपभोगवृत्ति को पूरे देश की स्त्रियों की स्थिति बताते हुए आर्थिक, सामाजिक, असमानताओं को जायज ठहराना और मुक्त बाजार व्यवस्था तथा स्वकेंद्रित उपभोक्तावाद को सभी भारतीय स्त्रियों के लिए एक बेहतर विकल्प बताना यह एक

हास्य झूठ के अलावा कुछ नहीं। यदि सच्चे नारीवाद को बनाए रखना हैतो हमें हर क्षेत्र में निर्ममता से इस झूठ का पर्दाफाश करना ही होगा।"

1) **नासिरा शर्मा के अनुसार-**"स्त्रीवादियों का यह अतिरेक मुझे उलझन में डालता है। पुरुष के खिलाफ खड़ी होने में ही स्त्री की मुक्ति देखी जाती है। ऐसी स्त्री की कल्पना क्यों नहीं की जाती जो न अपने खिलाफ हो, न परिवार के, न समाज के ।"

स्त्रियों का पारिवारिक जीवन-

स्त्रियां घर में ही रहकर बीड़ी बनाना, चटाई बनाना, छोटे-छोटे घरेलू सामान बनाना, ऊनी कपड़े बुनना आदि कार्यों में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन कार्यों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को पैसे भी कम मिलते हैं और जो मिलता भी हैउस पर पहला हक परिवार का माना जाता है। हमारे भारतीय समाज में यह जो पारिवारिक ढांचा है जिसमें यह माना जाता है कि सभी सदस्य एक बराबर हैं, वह सब जो कुछ भी करते हैं और सोचते हैं सबके लिए सोचते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका-

सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियां पुरुषों से आगे हैं ।आज कई सामाजिक संस्थान स्त्रियों की देख रेख में चलाए जा रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान से लेकर स्वच्छता अभियान में भी स्त्रियों का भरपूर योगदान है।

राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान-

राजनीति के क्षेत्र में स्त्रियों का योगदान कम नहीं है। ग्राम पंचायत से लेकर राष्ट्रपति तक का सफर स्त्रियों ने तय किया है। वर्तमान में कई राज्यों के मुख्यमंत्री, राज्यपाल भी स्त्रियां हैं।

स्त्री विमर्श का महत्व-

स्त्री-विमर्श केवल महिलाओं के अस्तित्व की वकालत ही नहीं करता वरन् उनके जीवन की समस्याओं, प्रत्येक क्षेत्र में उनकी भागीदारी एवं उनकी स्थिति का खाका भी तैयार करता है।

थेरी गाथा में अनेक वर्गों कि स्त्रियां शामिल हैं जिन्होंने भिक्षुणी बन अपने जीवन के भोगे अनुभवों को इन घटनाओं में पिरोया है। खेमा, सूजना, शैल सुमेधा राजवंश की महिलाएं थी। महा प्रजापति गौतमी, विजया, अभिरूपा, नंदा, सुंदरी,सोमा ब्राह्मण वंश की कन्याएं थी। गृहपति एवं वैश्य वर्ग की महिलाओं में पूर्णा, अनुपमा का नाम मिलता है। थेरी गाथा की अपनी पहचान है।

1980 के बाद संचार माध्यमों द्वारा उत्तर नारीवाद शब्द का इस्तेमाल होने लगा। विचारधारा के साथ जीवन मूल्यों को जोड़कर देखा जाने लगा। उत्तर नारीवाद स्त्री विरोधी रवैया, यौन शोषण तथा अतिवादी प्रवृत्तियों को अस्वीकार करता है। वैचारिक स्तर पर उत्तर नारीवाद द्वारा किए गए सवालों को भी समकालीन स्त्री-विमर्श अपने विमर्श में देखने की कोशिश करता है।

स्त्री संवेदना मानवीय संबंधों को केंद्र में रखकर स्त्री जीवन की सच्चाइयों पर अमल करती है। मनुष्य संवेदना के स्तर पर एक हो, छोटे- बड़े का फर्क, स्त्री-पुरुष का फर्क, जाति- समाज का अंतर मिटाकर समभाव की एकता में एक हो जाय। संवेदना की गहराइयों में जाने के लिए 'स्त्री जीवन की आत्मकथा' का अवलोकन करना होगा। केवल शहरी जीवन की स्त्रियां ही नहीं ग्रामीण जीवन की कमासुत औरतें जिनके पास केवल रोजगार ही एक औजार है, ऐसे दस्तूरों में संवेदना को खोजना स्त्री- विमर्श का लक्ष्य है।

द्वितीय अध्याय

मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

(1) जन्म एवं बाल्यकाल

(2) पारिवारिक जीवन

(3) कार्य क्षेत्र

(4) रचनाओं का परिचय

(5) पुरस्कार तथा सम्मान

(6) भारत में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पाण्डे का योगदान

विचार धारा के परिप्रेक्ष्य में 21वीं सदी की क्रांतिकारी लेखिका मृणाल पाण्डे को साहित्य के तर्ज पर कहना पूर्णतः सार्थक है। लेखिका मृणाल पाण्डे का जन्म 26 फरवरी सन् 1946ई. कोटीकम गढ़ (मध्यप्रदेश) में हुआ था। उनका पैतृक निवास कसून (अल्मोड़ा) है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में हुई। उसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। उन्होंने अंग्रेजी एवं संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, शास्त्रीय सगीत तथा ललित कला की शिक्षा कारकारन विश्वविद्यालय (वाशिंगटन डीसी.) से पूर्ण की। मूर्तिकला, डिजाइनिंग की शिक्षा भी पूर्णकी। 21 वर्ष की उम्र में इनकी पहली कहानी हिंदी साप्ताहिक धर्मयुग (1967) में छपी। प्रयाग, भोपाल, दिल्ली में अध्यापन कार्य भी किया।

मृणाल पाण्डे के पारिवारिक जीवन का उल्लेख इस प्रकार है- मृणाल पाण्डे की माता का नाम शिवानी था जो हिंदी की प्रख्यात लेखिका एवं उपन्यासकार हैं। शिवानी का उपनाम गौरापंत था। शिवानी का जन्म अक्टूबर 1923 ई. को विजय दशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ था। इनकी मृत्यु 21 मार्च 2003 में 79 वर्ष की उम्र में हुई।

रचनाओं का परिचय-

मृणाल पांडे के साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। अपने विचारों को साहित्य में पिरोने का कार्य मृणाल पांडे ने बड़ी बारीकी से किया है। नारी जीवन की अकुलाहट एवं संवेदना को

क्रमवार प्रस्तुत किया है। लेखन या साहित्य की कोई भी विधा उनसे अछूता नहीं है। उनके रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

उपन्यास-

(क) विरूद्ध (उपन्यास) –मृणाल पाण्डे जी का यह उपन्यास चरित्र प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में इन्होंने नायिका रजनी के मानसिक द्वन्द को दिखाया है। यह उपन्यास एक सामान्य स्त्री के वैवाहिक जीवन की स्थिति एवं उसके समस्त क्रिया कलापों को रेखांकित करता है।

(ख) पटरंगपुर पुराण (उपन्यास):- मृणाल पांडे का यह उपन्यास मिथक पर आधारित है। इसमें लेखिकाने इतिहास पुराण को सामाजिक कड़वाहटों के साथ चित्रित किया है। ऐतिहासिक आधार को लेकर सामाजिक, आंचलिक तथा संस्कृतिक मूल्यांकन किया गया है।

(ग) रास्तों पर भटकते हुए- मृणाल जी द्वारा लिखित इस उपन्यास का भावबोध बहुत विस्तृत है। इसमें राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की समस्याओं को उनके संदर्भ में अंकित किया गया है।

(घ) हमको दियो परदेश:- यह उपन्यास वेदना में ग्रसित एक छोटी सी बच्ची की आंखों में देखे गए संसार का चित्रण है जिसमें हम सभी कहीं न कहीं अपनी आंखो द्वारा देखलेते हैं। मृणाल पांडे की शोध परक दृष्टि से कुछ छिप नहीं पाया है।

(च) अपनी गवाही:- अपनी गवाही नामक उपन्यास पत्र कारिता और राजनीति पर आधारित है। मृणाल पांडे का यह उपन्यास आत्मकथात्मक उपन्यास है। यदि इसे उनके जीवन की कथा कहा जाए तो सार्थक ही है। उपन्यास की नायिका कृष्णा, मृणाल पांडे हैं।

(छ) देवी (उपन्यास)-मृणाल पांडे का यह उपन्यास रिपोर्ट परक शैली में लिखा गया है। उपन्यास में लेखिका ने देवियों की कथा को आधार बनाकर अपने परिवार, समाज तथा कई प्रदेशों की स्त्रियों का उदाहरण पेश किया है।

(ज) सहेलारे (उपन्यास)- भारतीय परिवेश हमेशा से संगीत की दुनिया का शौकीन रहा है। संगीत का ऐसा दौर भी था कि तब संगीत के बड़े-बड़े जानकार हुआ करते थे।

कहानी-संग्रह- मृणाल पांडे के उपन्यासों एवं नाटकों की तरह उनकी कहानियां भी बहुत प्रसिद्ध है। कहानीकार की दृष्टि से कहा जाए तो मृणाल पांडे समकालीन महिला कहानीकार है। इनकी कहानियां किसी आधार को ही नहीं बल्कि उनके अंदर मूल्यों को खोजती है। तो कई बार तो ऐसा लगता है की हम कहानियां सुनरहे हैं और अपना निष्कर्ष भी निकाल रहे हैं। कहानी में उलझी हुई गुत्थी पाठक बड़ी आसानी से समझ जाता है। इतना ही नहीं तपाक से वह उसका समाधान भी निकाल ना चाहता है।

नाटक- मृणाल पांडे लेखिका तो है ही साथ ही साथ नाट्य विधा पर काम करने वाली प्रतिष्ठित कलम कार हैं। नाट्य शिल्प एवं नाट्य प्रयोगों की नई दुनिया का रेखांकन इनके द्वारा देखने को मिलता है। आज नाटक भले ही बहुतायत लिखे जा रहे हैं पर मृणाल पांडे ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि हिंदी में मंचन करने के लायक मौलिक नाटक नहीं लिखे जा रहे हैं।

निबंध एवं अन्य विधाएं- मृणाल पांडे ने कई आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं। यह निबंध स्त्री विमर्श पढ़ने वालों एवं उससे संबंधित साहित्य कारों के लिए एक ऐसी संचित निधि है जो उनको इस क्षेत्र में ज्ञान का सागर प्रस्तुत करता है, चिंतन की नई दिशा का अवसर प्रदान करता है। उनके निबंध मानव के मन में जमी पुरानी रूढ़िग्रस्त दीवारों को ध्वस्त करते हैं। उसके स्थान पर नई चिंतन शील एवं चेतना युक्त मकान का निर्माण करते हैं। पकी पकाई भाषा को छोड़ कर तर्क युक्त भाषा का द्वार खोलते हैं।

तृतीय अध्याय

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(1) 'विरूद्ध' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(2) 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(3) 'देवी' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(4) 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(5) 'हम को दियो परदेश' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(6) 'अपनी गवाही' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

(7) 'सहेलारे' उपन्यास में स्त्री-विमर्श

प्रस्तावना- गद्य की सभी विधाओं में जैसे नाटक, कहानी, आत्मकथा आदि की तरह उपन्यास भी साहित्य का एक अंग है। उपन्यास साहित्य की एक ऐसी विधा है जो बदलते हुए परिवेश में समाज की सच्चाइयों को बड़ी आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त करने में समर्थ होता है। स्वतंत्रता के बाद महिला उपन्यासकारों की संख्या में इजाफा हुआ है।

इन महिला रचनाकारों में मृणाल पाण्डे का भी नाम महत्वपूर्ण है। मृणाल पाण्डे ने वर्तमान समाज की सच्चाईयों को अपने उपन्यास का केंद्र बनाया है। इनके उपन्यास-'पटरंगपुर पुराण','विरुद्ध','देवी''रास्तों पर भटकते हुए', 'हमको दियो परदेश'आदि महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान कथा परिदृश्य में मृणाल पाण्डे का अपना महत्वपूर्ण स्थानहै। इनके लेखन के केंद्र में स्त्री की समस्याएं, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन का वर्णन भी मिलता है। इनके उपन्यासों में प्रमुख पात्र स्त्री ही होती है।

औरतों का गृहस्थ जीवन कितना कठिन होता है। मृणाल पाण्डे ने अपने जीवन के अनुभवों एवं पीढ़ियों के किस्सों के आधार पर सीधी- सीधी टिप्पणी किया है। अपने परिवार में ही रोटी- पानी की व्यवस्था बच्चों, तथा पति काध्यान स्त्रियों को ही रखना पड़ता है, साथ ही अपनी संस्कृति की मर्यादा को भी निभाना पड़ता है।

चतुर्थ अध्याय

मृणाल पाण्डे के कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श

बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कहानी-संग्रह)

(1) बिब्बो
(2) पितृदाय
(3) कुत्तेकीमौत
(4) प्रतिशोध
(5) एकनीच ट्रेजेडी
(6) एक स्त्री का विदागीत
(7) कुनू
(8) प्रेमचंद: जैसा कि मैंने उन्हें देखा
(9) जगह मिलने पर साइड दी जायेगी उर्फ तीसरी दुनिया की एक प्रेमकथा
(10) परियों का नाच ऐसा !
(11) लक्का-सुन्नी
(12) दूरियाँ
(13) हमसफर
(14) चार नम्बर सुनहरी बागलेन
(15) एक थी हँसमुख दे
(16) रिक्ति
(17) लेडीज
(18) लेडीजटेलर
(19) बचुली चौकीदारिन की कढ़ी ।

चार दिन की जवानी तेरी (कहानी-संग्रह)– इसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं जैसे-

1. लड़कियाँ
2. एक पगलाई सस्पेंस कथा

3. उमेशजी
4. कर्कशा
5. हिर्दा मेयो का मंझला
6. मुन्नू चा की अजीब कहानी
7. बीज
8. सुपारी फुआ
9. अब्दुल्ला
10. विष्णु दत्त शर्मा के लिए एक समकालीन नीति कथा
11. चार दिन की जवानी तेरी

यानी कि एक बात थी (कहानी-संग्रह)- इसमें कुल 28 कहानियां हैं जैसे-

1. कोहरा और मछलियाँ
2. चिमगादड़ें
3. ढलवान
4. औडर
5. व्यक्तिगत
6. शरण्य की ओर
7. चेहरे
8. धूप-छाँह
9. प्रेत-बाधा
10. तुम और वह और वे
11. कगार पर
12. दरम्यान
13. कैंसर

14. दुर्घटना
15. आततायी
16. शब्दवेधी
17. समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर
18. रूबी
19. कौवे
20. लकीरें
21. मीटिंग
22. नुक्कड़ तक
23. गर्मियाँ
24. खेल
25. बर्फ
26. अँधेरे से अँधेरे तक
27. दोपहर में मौत
28. यानी कि एक बात थी।

मृणाल पाण्डे की कहानियों में जीवन का यथार्थ बोध दिखाई देता है। इनकी कहानियां मानव मन की परतों को खोलती हैं। कहानियों में व्यक्त जीवन का सम्पूर्ण भाग बड़े अच्छे से दिखाई देता है। इनकी कहानियों में केवल सामाजिक चित्रण ही नहीं है बल्कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर समाज को परखने का नया अंदाज भी है यही अंदाज मृणाल पांडे को सबसे अलग रखता है। उनका मूल्यबोध, स्त्री जीवन के नए सरोकार को व्यक्त करता है।

इनकी कहानियां जीवन-शैली के कई मायने उपस्थिति करती हैं। छोटे बच्चों की जिंदगी या महिला समस्या का उद्‌घाटन इनकी कहानियों में जीवंत उदाहरण के साथ मिल जाता है। कहानियों मेंनवीन भाव बोध, जीवन के साथ-साथ राजनीतिक दांव पेंच का गहरे स्तर पर भी भंडा फोड़ हुआ है। कहानियां केवल कही ही नहीं गई हैं बल्कि मानवता के स्तर

पर व्यंग्य के रूप में देखी गयी है जिसमें रूदन की कहानी भी है जिसे सुनकर एक नयापन लगता है। कहानियां सीधी-सीधी तो कहीं ही गई है साथही हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समझाने का प्रयास भी किया गया है। इनकी कहानियां जीवन रूपी माला को कई बने बंडल में लपेटती चली जाती हैं यदि उस माला के बंडल के किसी एक पक्ष को खंडित किया गया तो पूरा का पूरा मूल्यबोध ही ध्वस्त हो जाएगा। जीवन से अलगाव, कटाव, दुराव नहीं बल्कि जीवन जीने की आकांक्षा है।

मृणाल पांडे के कहानी संग्रह में जीवन जगत की गहराई का मापदंड अलग है। सहजता और दुरूहता तो है ही तथा जटिलता का अंकन तो एक लहजे में व्यक्त किया गया है। जीवन की अनुभूतियों को कठिनता के स्तर पर नहीं बल्कि सहजता की मनोवृत्ति के साथ व्यक्त किया गया है। मृणाल पाण्डे की कहानियां कभी-कभी खुद बखुद अपनी शीर्षक खोल देती हैं, पढ़ने वाला पाठक यही कहता है कि कहानियां समाज के खुले रीति-रिवाजों एवं मनोभावों को रेखांकित करती हैं। इतना ही नहीं सामाजिक खोखलेपन को दिखाती हैं। कहानियां पाठक के मन में विचारों को जन्म देने लगती हैं, वहां कल्पना का स्थान नहीं रह जाता है। जहाँ जीवन का भावबोध, अनुभूतियों के गुम्फन में गुम्फित हो जाता हैं, वहां सहजता आ जाती है बनावट का कोई स्थान नहीं रहता, यही मूल्यबोध मृणाल जी की कहानियों को सबसे अलग कर पाने में समर्थ है।इसके साथ इनकी कहानियां आज के दौर में लिखी गई कहानियों को सबसे अलग कर पाने में समर्थ है।

पंचम अध्याय

मृणाल पाण्डे के नाटकों में स्त्री-विमर्श

(1) 'जो राम रचि राखा' नाटक में स्त्री-विमर्श

(2) 'आदमी जो मछुआरा' नहीं था' नाटक में स्त्री-विमर्श

(3) 'काजर की कोठरी' नाटक में स्त्री-विमर्श

(4) 'चोर निकलकर भागा' नाटक में स्त्री-विमर्श

(5) 'शर्मा जी की मुक्ति कथा' नाटक में स्त्री-विमर्श

(6) 'सुपरमैन की वापसी' नाटक में स्त्री-विमर्श

(7) 'धीरे-धीरे रे मना' नाटक में स्त्री-विमर्श

'जो राम रचि राखा' नाटक में स्त्री-विमर्श-

आधुनिक महिला नाटककारों में मृणाल पांडे का महत्वपूर्ण स्थान है। 'जो राम रचि राखा' नाटक श्री विजयदान देथा की राजस्थानी लोक कथा खोजी से अनुप्रेरित होकर लिखा गया है। यह नाटक स्त्री-विमर्श की पड़ताल करता है। यह नाटक कुल मिलाकर तीन अंकों में और सात दृश्यों में लिखा गया है। नाटक की शुरुआत नान्दी पाठ से होती है जिसमें शिव के साथ भवानी (पार्वती) की स्तुति की गयी है। इस नाटक में स्त्री सावित्री और बड़ी रानी और छोटी रानी की सहनशीलता एवं मर्यादा को दिखाया गया है।

'आदमी जो मछुआरा नही था'

मृणाल पाण्डे का बहुचर्चित नाटक है। स्त्री नाटककारों की परंपरा में मृणाल पाण्डे प्रयोग की टहनी पर तथा नाट्य शिल्प की अद्‌भुत धारा में गिनी जाती हैं। स्वतंत्रता के बाद नाट्य शिल्प के लेखन को तथा जीवन को मंच पर लाने का काम जो नाटककारों ने किया है वह बहुत ही आसान है।

काजर की कोठरी नाटक में स्त्री-विमर्श-

कुल चौदह दृश्यों में लिखा गया यह नाटक स्त्री जीवन के मुद्दों का व्यौरा देता है साथ ही निम्न एवं उच्च वर्ग की मनो वृत्तियों को उजागर करता है। स्त्री संवेदना एवं पात्रों की संवाद योजना नाटक में बिल्कुल सटीक एवं स्पष्ट है। जिसे पढ़कर लगता है कि यदि इस नाटक को नवजीवन का नवीन प्रयोग कहा जाए तो सार्थक प्रतीत होगा। नाटक में नेपथ्य से यह पता चलता है कि अभी संध्या होने में दो घंटे की देर है मगर सूर्य अदृश्य है क्यों कि आकाश में

केवल काली घटाएं ही दिखाई दे रही हैं। प्रारंभ में ही दरभंगा से सीधे वाजितपुर जाने वाले मार्ग का चित्रण हैं।

'चोर निकल के भागा' नाटक में स्त्री-विमर्श-

चोर निकल के भागा 1995 में लिखा गया नाटक है। इस नाटक का मंचन भी हो चुका है। साहित्य में नाटक की विधा मनुष्य के जीवन के प्रत्येक अनुभव को दर्शाता है कि जीवन की अनुभूतियां समाज को किस प्रकार से सीख देती हैं। महिला नाटक कारों में मृणाल पांडे का मुख्य स्थान है। नाटक में पात्रों की संख्या अधिक है, खासकर पुरुष पात्रों की। पुरुष पात्रों में महेश, रमेश, सुरेश, रामअवतार, बाबाजी, मास्टर गेंदा लाल, टी.वी. उद्घोषक, अधिकारी, कर्मचारी, बब्बर भाईसाहब, टीटो-पीटो, जोकर इस के अलावा स्त्री-पत्रों की संख्या कम है। 'चोर निकलकर भागा' नाटक अपने समकालीन भाव-बोधको व्यक्त करने में अत्यंत सफल रहा है। शासक वर्ग की भोग-विलास की प्रवृति, आम जनता की कठिनाइयों, तत्कालीन जनता की स्थिति, क्रूरता, स्वार्थपरता, हिंसा, मक्कारी और स्त्री के अस्तित्व को नाटक में दिखा या गया है।

'शर्मा जी की मुक्ति कथा' नाटक में स्त्री-विमर्श-

शर्मा जी की मुक्ति कथा हमारे मीडिया और आरक्षण वादी व्यवस्था में चल रहे एक मंथन के विक्षिप्त दौर में लिखा गया नाटक है। और यहां भी मंटो की बात को टोबाटेक सिंह की तरह और वेद के बदलाव की शिक्षा की तस्वीर असली साधना है और पागल करार दिये गए अनंतनारायण शर्मा के वक्तव्य द्वारा प्रस्तुत है।

मृणाल पांडे का यह नाटक मूलतः पत्रकारिता जीवन का भेद खोलता है। एक पत्रकार को जीवन में सत्ता के खिलाफ लिखने पर क्या-क्या झेलना पड़ता है। कोई भी पत्रकार सरकार, राजनीति और उच्च वर्ग के खिलाफ लिखने की हिम्मत कैसे कर सकता है? खासकर हिंदी मीडिया में काम करने वाले पत्रकार के पास तो और विकल्प नहीं है? अंग्रेजी मीडिया में लिखना, बोलना थोड़ा अलग मगर हिंदी मीडिया के पास अनेक समस्याएं हैं।

'सुपर मैन की वापसी' नाटक में स्त्री-विमर्श-

सुपर मैन की वापसी में मृणाल पांडे का रेडियोनाटक है। यह एक ऐसा नाटक है जिसमें सुपर मैन है, वह जगत के संपूर्ण कार्य को जल्दी से जल्दी अर्थात तुरंत करने में माहिर है। किसी भी कार्य को वह चुटकियों में करने की गारंटी लेता है।

'धीरे-धीरे रे मना' नाटक में स्त्री-विमर्श-

कुल छः पृष्ठों में लिखा गया यह नाटक पारिवारिक जीवन की झांकी प्रस्तुत करता है। साथ ही साथ स्त्री उमा के दैनिक काम काज, उसकी व्यस्तता एवं उसकी जिंदगी की परेशानियों का खाका प्रस्तुत करता है। लोग समझते हैं कि स्त्रियों को घर में क्या कार्य होते होंगे? बस यही न कि खाना बनाकर बैठ जाओ लेकिन यदि स्त्रियों के दैनिक काम काज से लेकर जीवन की समस्त गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाए तो तमाम आवश्यकताएं, परेशानियां हमारे सामने आ जाती हैं।

षष्ठ- अध्याय

मृणाल पाण्डे के निबन्धों एवं अन्य विधाओं में स्त्रीं विर्मश -

मृणाल पाण्डे के निबन्धों एवं अन्य विधाओं का विवरण इस प्रकार है-

निबंध-

(1) परिधि पर स्त्री

(2) स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक

(3) जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं

(4) ओ उब्बीरी

(5) स्त्री लम्बा सफर

(6) ध्वनियों के आलोक में स्त्री

अन्यविधाएं-

सम्पादन-

(1) पाण्डे मृणाल- बंद गलियों के विरुद्ध, राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली।

(2) पाण्डे मृणाल- बोलता लिहाफ़, (2001), राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली।

पत्र/ पत्रिकाएं-

(1) दैनिक हिंदुस्तान

(2) अमर उजाला

(3) वामा (पत्रिका)

(4) कादम्बिनी (पत्रिका)

(5) नन्दन (पत्रिका)

मृणाल पाण्डे का निबन्धात्मक लेखन नारी-विमर्श की तस्वीर उपस्थित करता है। वह मुद्दों की पड़ताल तो करता ही है साथ ही नारी जीवन की विसंगतियों एवं नारी विमर्श पर बयानबाजी करने वालों का भी मूल्यांकन करता है।

(1) परिधि पर स्त्री- इस पुस्तक का पहला संस्करण (1996 ई0) में प्रकाशित हुआ। कुल छोटे-छोटे बीस निबन्धात्मक लेख है। ये लेख स्त्री विमर्श के मुद्दों तथा विसंगतियों को प्रस्तुत करते हैं। लगभग 109 पृष्ठों में लिखी गई यह पुस्तक नारी-विमर्श की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, संस्कृतिक, भौगोलिक, राष्ट्रीय परिदृश्य को रेखांकित करती है। पुस्तक के प्रारम्भ में लेखिका का मंतब्य है कि मै सबकी बातें चुपचाप सुनती हूँ।

(2) स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीतिक तक-

मृणाल पाण्डे की यह पुस्तक जीवन की गतिविधियों को उजागर करती है। आखिर में स्त्री अपने शरीर, सौन्दर्य एवं शक्ति के बल परदेश की राजनीति का सफर किन-किन पायदानों के माध्यम से तय करती है?

दो खण्डों में विभाजित इस पुस्तक में पहला लेख **'निज मन मुकुर सुधारि'** है। मृणाल पाण्डे जी ने इस लेख में स्त्री के अस्तित्व की तलाश एवं समाज में उसके स्थान को निर्धारित किया है। स्त्री अपने सम्मान के लिए स्व की तलाश कर रही है। समाज में स्त्री की मूल धारणा नकारात्मक भले ही रही हो लेकिन स्त्री भी कह रही है कि-मुझे जीवन बाँचना है/ मुझे भी

तोड़ना है शिव का धनुष (बानीरा गिरि)। लोगों के द्वारा भले ही यह कल्पना की जाय कि आत्मनिर्भर स्त्री मेंअपने घर-परिवार के लिए प्यार या चिन्ता नही होती, परन्तु यह कितना यथार्थ है यह सब जानते है?

(3) जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं-

मृणाल पाण्डे ने इस पुस्तक में अपने समय में लिखी गयी टिप्पड़ियों एवं आलेखों का नारी विषयक विवरण प्रस्तुत किया है। लेखिका ने राजनीति में महिला सशक्तिकरण एवं पंचायती व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी के साथ-साथ अन्य छोटे-छोटे सवालों का जिक्र किया है। जब महिला विषयक विवरण शुरु होते है तो लगता है कि कोई क्रान्तिकारी फिल्म चल रही है जिसमे पितृसत्तात्मक व्यवस्थामें फसी स्त्री छटपटा रही है। उसमे केवल स्त्री की छटपटाहट नहीं है बल्कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की छटपटाहट कहने वाले लोगो से तीखा सवाल है। मृणाल पाण्डे पत्रकार भी है इसलिए हर सवाल को सर्वे व रिपोर्ट के आधार पर रखती हैं। चूकि मृणाल पाण्डे का नारी-विमर्श पढ़ा-पढ़ाया (किताबी) नारी विमर्श नही है बल्कि शोध परक एवं रिपोर्ट परक नारी-विमर्श है।

(4) ओ उब्बीरी-

कुल 9 अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक में मृणाल पाण्डे के एक से बढ़कर एक लेख है। ये लेख नारीवाद की बनावटी अवधारणा का खण्डन करते हैं। तर्क एवं प्रमाण के आधार पर प्रतिष्ठित मृणाल पाण्डे का नारी विमर्श नारी-पुरुष के पुराने मुद्दों की खाई को पाटता है। इनके यहां नारी को दोयम दर्जे से निकालकर स्वच्छ मानवीय धरातल पर उच्च स्थान प्रदान करने की कोशिश की गयी है। **'एक सोते शहर मेंनिद्राहीन'** नामकलेखमें लेखिका ने अपनी विहंगम दृष्टि से समस्याओं में उलझी स्त्रियों की गाथा का विस्तृत वृतांत प्रस्तुत किया है। लेखिका ने इस पुस्तक में अपने भ्रमण के दौरान देखी गयी घटनाओं का आँखो देखा वर्णन किया है।

(5) स्त्री लम्बा सफर-

इस पुस्तक में छोटे-छोटे विचारात्मक लेख है जिसमे नारी दशा, नारी सुरक्षा तथा महिला सशक्तिकरण की बात की गई है। घर-परिवार से लेकर संसद तक स्त्रियों ने जो भागीदारी निभायी है उसमे ग्रामीण औरतों की तादात बिल्कुल कम है। शहरी और कस्बाई औरतों में भले चेतना जागृत हुई है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं अबभी इससे दूर हैं। तमाम सामाजिक बन्धनों एवं पाबंदियों के बीच ग्रामीण औरतों के दर्द एवं मजबूरियों को कौन देखता है? **'संसद में एक बार फिर असत्यनारायण की जै'** नामक लेख महिला आरक्षण बिल तथा संसद में महिलाओं की भागीदारी को दर्शाता है।

(6) ध्वनियों के आलोक में स्त्री-

प्रख्यात लेखिका मृणाल पाण्डे की पुस्तक 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' संगीत के क्षेत्र में अतुलनीय एवं स्त्री विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है। संगीत की ध्वनियों में अपनी वेदना का राग अलाप रही स्त्री सम्पूर्ण मानव समाज को अपने सुरों के सुनने पर मजबूर कर देती है।

भारत हो या पश्चिम हर जगह संगीत का बड़ा महत्व था बंगाल भी संगीत का केन्द्र था परन्तु भारत के हर कोने मेंसंगीतकारों का दल अपना राग प्रसारित करने में लगा था। बेगम अख्तर के गीत सुनकर महफिलों में हिन्दू रोने लगते थे और पंडित ओंकार नाथ के गायन सुनकर हर मुसलमान की आंखे गीली हो जाती थी। 19वीं-20वीं सदी में जो समाज सुधारक स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे वे मानते थे कि यदि स्त्रियों को शिक्षा दी जाय तो एक कुनबा शिक्षित हो सकता है।

अन्य विधाएँ-

पत्रकारिता- मृणाल पाण्डे मूलतः पत्रकार हैं । पत्रकारिता जगत में उनका नाम बड़े गौरव का सूचक है। एक वरिष्ठ पत्रकार होने के कारण उन्होंने अपने साहित्य में सर्वेपरक, विश्लेषण करके साहित्य को रचा।इनके साहित्य में पत्रकारिता की झलक दिखाई देती है। मृणाल पाण्ने ने कई पत्रों का सम्पादनभी किया जो इस प्रकार है-

(1) दैनिक हिन्दुस्तान-

1936 ई0 में लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित होकर दिल्ली से राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान का प्रकाशन शुरु हुआ। इसके सर्वप्रथम सम्पादक सत्यदेव विद्यालंकार हुए। सत्यदेव 1936 से 46 तक इसके सम्पादक रहे। इस दौरान इन्होने राष्ट्रीय आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतना को प्रसारित करने का कार्य किया। 1946-63 तक मुकुट बिहारी शर्मा इसके सम्पादक रहे तथा मृणाल पाण्डे भी इसकी संपादक रही ।

(2) वामा (पत्रिका)-

यह महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण पत्रिका थी। फरवरी 1984ई. में प्रकाशन शुरु हुआ। इसके सम्पादकीय पृष्ठों में मृणाल पाण्डे ने यह भी कहा कि हमारी निरन्तर यह कोशिश रहेगी कि यह पत्र पठन पाठन, खोजबीन एवं विचार शीलता के नए आयाम सामने रखती रहें।

(3) कादम्बिनी-

इस पत्रिका का प्रकाशन श्री बालकृष्ण राव ने नवम्बर 1960 ई.में इलाहाबाद से किया। 1962 ई. में इसके सम्पादक रामानन्द बने। मार्च 2003 से 2009 तक मृणाल पाण्डे इसकी सम्पादक रही।

(4) नन्दन (पत्रिका)-

इस पत्रिका का प्रकाशन नवम्बर 1964 ई0 में दिल्ली में हुआ। इसके प्रथम सम्पादक राजेन्द्र अवस्थी थे। मृणाल पाण्डे भी इसकी सम्पादक रही।

इस प्रकार यह कहना सार्थक प्रतीत होता है कि मृणाल पाण्डे ने स्त्री-विमर्श की जो पड़ताल की है वह वैचारिक स्तर पर एक प्रेरणा स्त्रोत है। वर्षो से दबी-कुचली मानसिकता से बाहर निकलकर उपेक्षित नारी को शिक्षा, राजनीति, समाज तथा न्यायिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। किताबी नारी विमर्श से आगे बढ़कर मृणाल पाण्डे ने शोधपरक एवं रिपोर्टपरक नारीवाद को बढ़ावा दिया है। यही कारण है कि उनका नारीवाद सभी के लिए चुनौतीपूर्ण बन गया है। नारीवाद पर लिखते समय उनके विचार बहुत गहरे होते हैं इसलिए नारीवाद पर बतकही करने वाले लेखकों/समीक्षकों/स्त्रीवादियों को कठघरे में खड़ा करते है।

वे नारी विमर्श के सकारात्मक लेखन को एक नया मार्ग देती हैं जिससे नारियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान कायम रहे।

निष्कर्ष/सुझाव-

इस प्रकार मृणाल पाण्डे के साहित्य के आधार पर हम कह सकते है कि उनका साहित्य आगे आने वाले लोगों के लिए एक ऐसा प्रेरणास्त्रोत है जिससे जीवन एवं जगत के अनुभव प्रदर्शित हो रहे है। मृणाल जी ने नारी विमर्श के माध्यम से स्त्री जीवन की कड़वाहटों को व्यक्त किया है। ग्रामीण, शहरी, दलित, कामकाजी तथा रोजगार परक स्त्रियों का जिक्र करके स्त्री संवेदना के माध्यम से उनके अर्न्तमन को छुआ है। इनके उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबंधात्मक लेख स्त्री विमर्श पढ़ने वालों के लिए सुझाव भी हैं। इनका साहित्य ज्ञानवर्द्धक तो है ही साथ ही साथ इसे रिसर्च की दृष्टि से पढ़ा जाना चाहिए। मृणाल जी के साहित्य में छुपे अर्न्तद्वन्द्व, विडम्बनाएं, अनुभूतियां स्त्रियों को यह सीख देती है कि संघर्ष अभी थमा नहीं है, अभी तो और पायदान बाकी है। अतः मृणाल पाण्डे का नारी विमर्श लेखकों/समीक्षकों तथा स्त्री विमर्श के जानकारों के लिए एक नवीन मार्ग तैयार करता है।

संदर्भ ग्रथ सूची-

1. स.प्रा. ठाकरे रविंद्र- प्रथम दशक के हिंदी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्श, (2016) चिंतन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 17
2. पाण्डे मृणाल- जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं, (2006) राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली, पृ. संख्या 52
3. चतुर्वेदी जगदीश्वर- स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, (2000) अनामिका पब्लिशर्स, पृ.सं. 239 240
4. पाण्डे मृणाल- यानी कि एक बात थी (कहानी संग्रह), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली,
5. पाण्डे मृणाल- विरुद्ध (उपन्यास), (2013), राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ठसंख्या-8

6. पाण्डे मृणाल- पटरंगपुरपुराण (उपन्यास), (2010) राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ठसंख्या-9
7. गीतेनिहार -स्वातंत्र्योत्तरमहिलाउपन्यासकारोंमेंयथार्थकेविभिन्नरूप,पृष्ठ 113
8. पाण्डेमृणाल- विरुद्ध,उपन्यास,(2013),राधाकृष्णप्रकाशन,नईदिल्ली,पृष्ठसं 9
9. पाण्डेमृणाल- विरुद्ध,उपन्यास,(2013),राधाकृष्णप्रकाशन,नईदिल्ली,पृष्ठसं 127
10. पाण्डेमृणाल -विरुद्धउपन्यास,(2013),राधाकृष्णप्रकाशननईदिल्ली,पृष्ठ 36
11. पाण्डे मृणाल- बचुली चौकीदारिन की कढ़ी कहानी संग्रह, (बिब्बो कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 11-12
12. डा0 पाण्डे भवदेव-बंग महिला नारी मुक्ति का संघर्ष, जीवन के दस्तावेद, पृष्ट संख्या 32
13. प्रो0 सिंह लक्ष्मण विष्ट बटरोही-महादेवी वर्मा का रचना संसार, उमा भट्ट निजता की खोज, पृष्ठ संख्या 02
14. पाण्डे मृणाल- सम्पूर्ण नाटक, (2011) राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ठसंख्या 19
15. पाण्डे मृणाल- सम्पूर्ण नाटक, (2011) राधाकृष्ण प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ठसंख्या 52
16. शिवमूर्ति- केशर कस्तूरी, (2015) राजकमल प्रकाशन नईदिल्ली, पृष्ठसंख्या 86
17. शुक्ला अर्चना-मृणाल पाण्डे का रचना संसार, पृष्ठ(पुस्तक के कवर पृष्ठ से)
18. पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-08
19. शुक्ल रामचंद्र- हिंदी साहित्य का इतिहास, (2002), प्रकाशन संस्थान दिल्ली।
20. डॉ. मानस सुनील कुमार-आलोचनदृष्टि (पत्रिका), (जनवरी- मार्चअंक 2020), आजाद नगर बिंदकी कानपुर।